

REF

10032

23:23 999

LIBRARY
OF DALUDA

श्री घंटाकर्ण-माणिभद्र-मंत्रतंत्रकल्पादि संग्रह



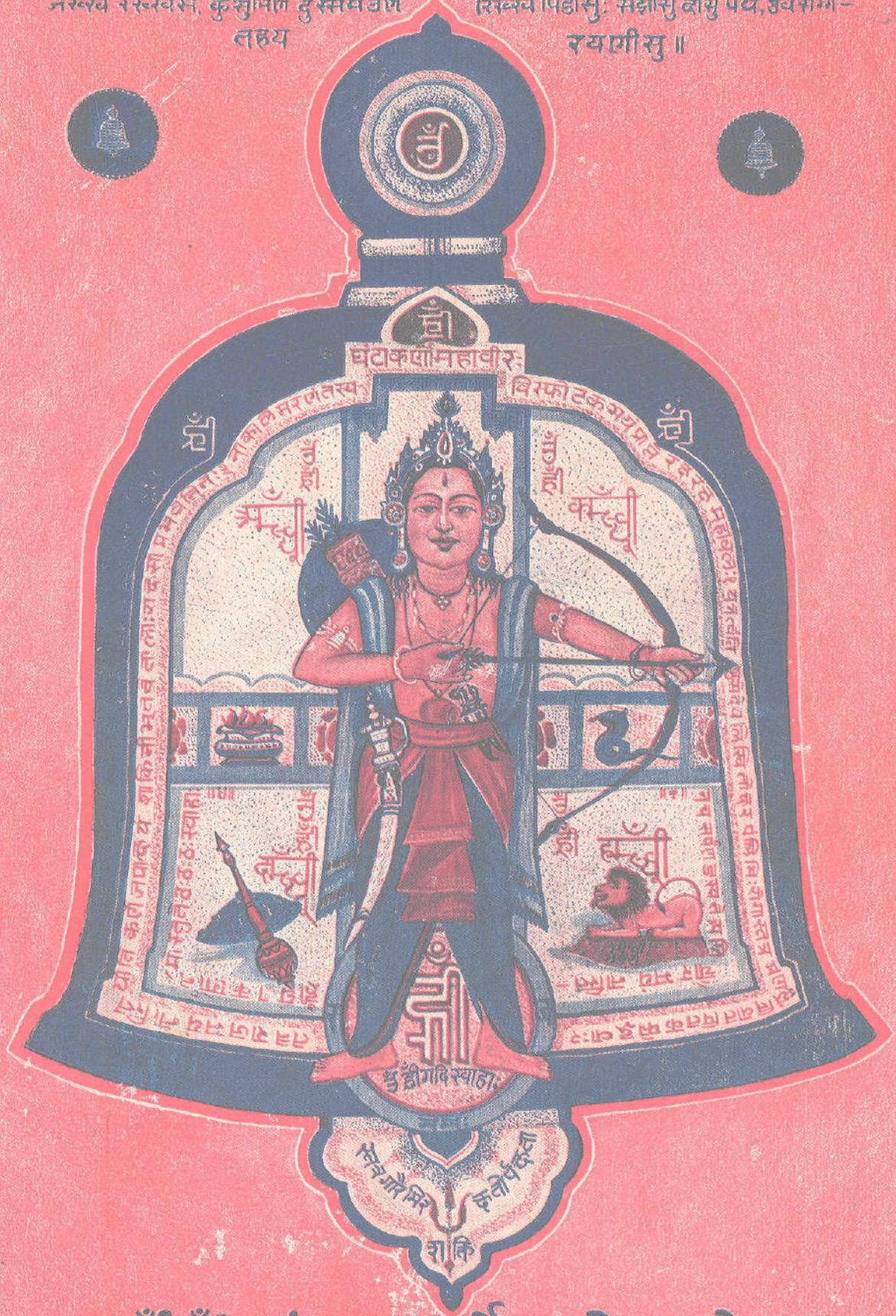
संपादक
साराभाई नवाब



प्राप्तिस्थान : साराभाई मणिलाल नवाब
नागजी भूधरनी पोल अमदावाद
मूल्य सात रुपिया

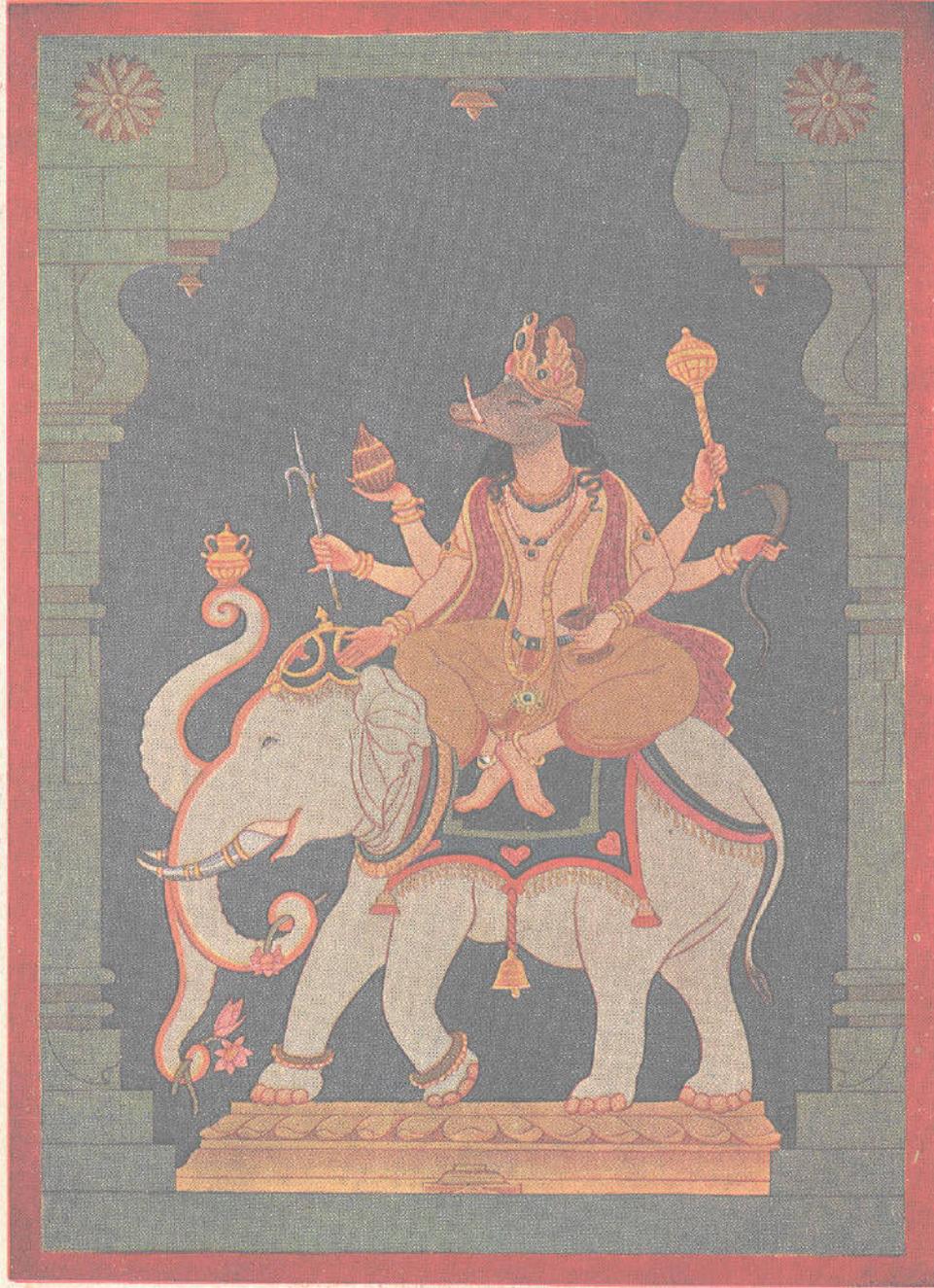
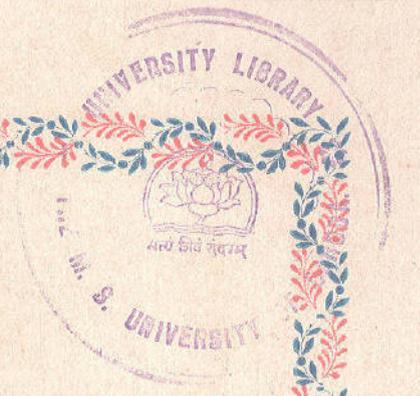
BL
1365
T268

॥ उँ भवण वड वाण वंवर, जोइ सवासी विमाण वासीअ; जेके विदुठु देवा, ते सव्हे तुव समंतु मम स्वाहा ॥
 ॥ उँ रीग जल जलण विसहर, जो री मइइ मयरण भयाइ; पासजिण नाम संकिणणल घसमंति सव्हाइ ॥
 ॥ एव महा भय हरे, पासजिणिदस्स, मयव मुआरे; भविजणणहयरं कल्लाण परं परं निहाण ॥ राय भय -
 जरस्य वरस्यस, कुसुमिण दुस्सम उण रिखस्य पिडासु; संडासु दोसु पथे, उवसणि -
 लहय रयणीसु ॥



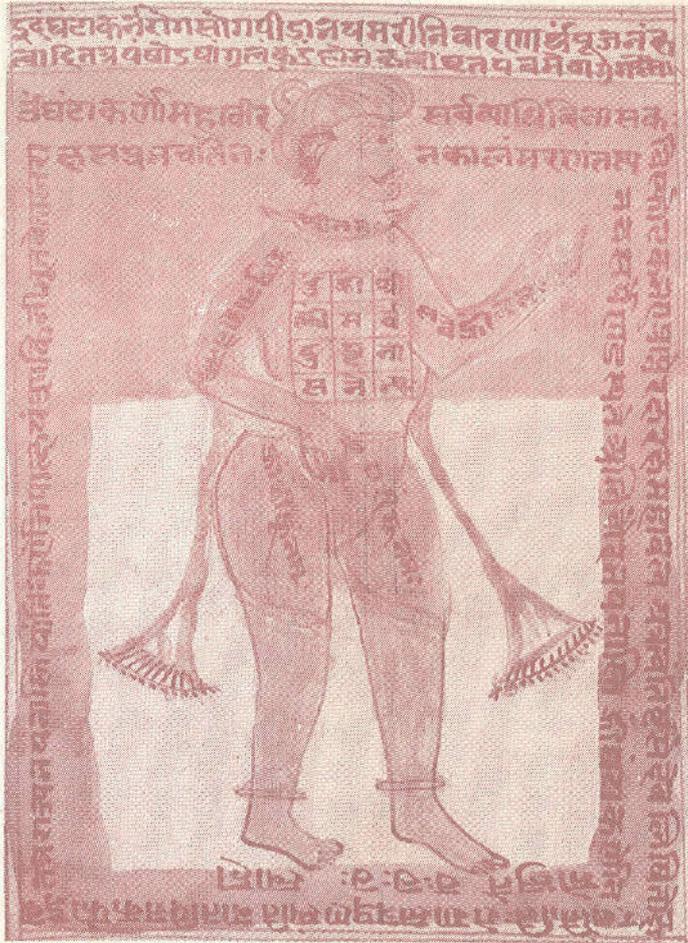
उँ ह्रीं घं टा कर्णो नमो स्तुते
 वः वः वः स्वाहाः

श्रीघंटाकर्ण महावीर



तपगच्छमंडन श्रीमाणिमदजी

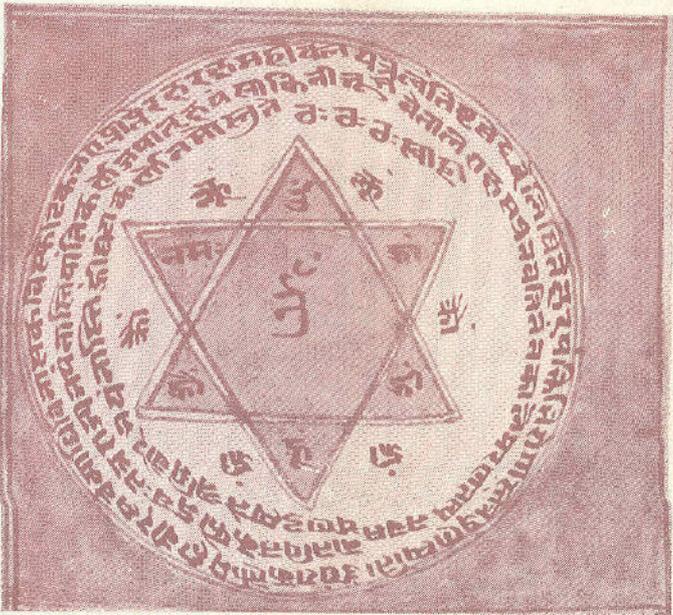
प्राप्तिस्थान : साराभाई मणिलाल नवाब, नागजीभूदनो पोस्ट, अमदावाद



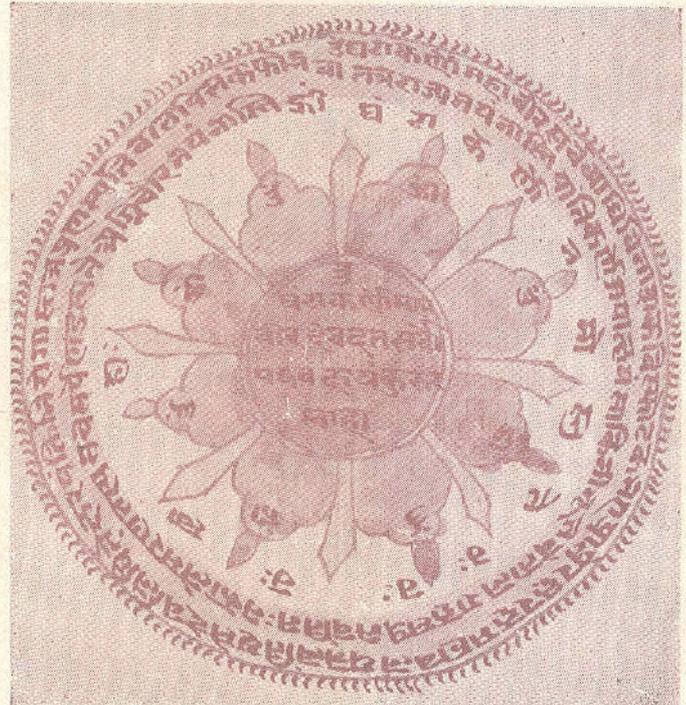
चित्र १

अ	इ	उ	ए	ओ	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ण	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ

चित्र ५



चित्र २



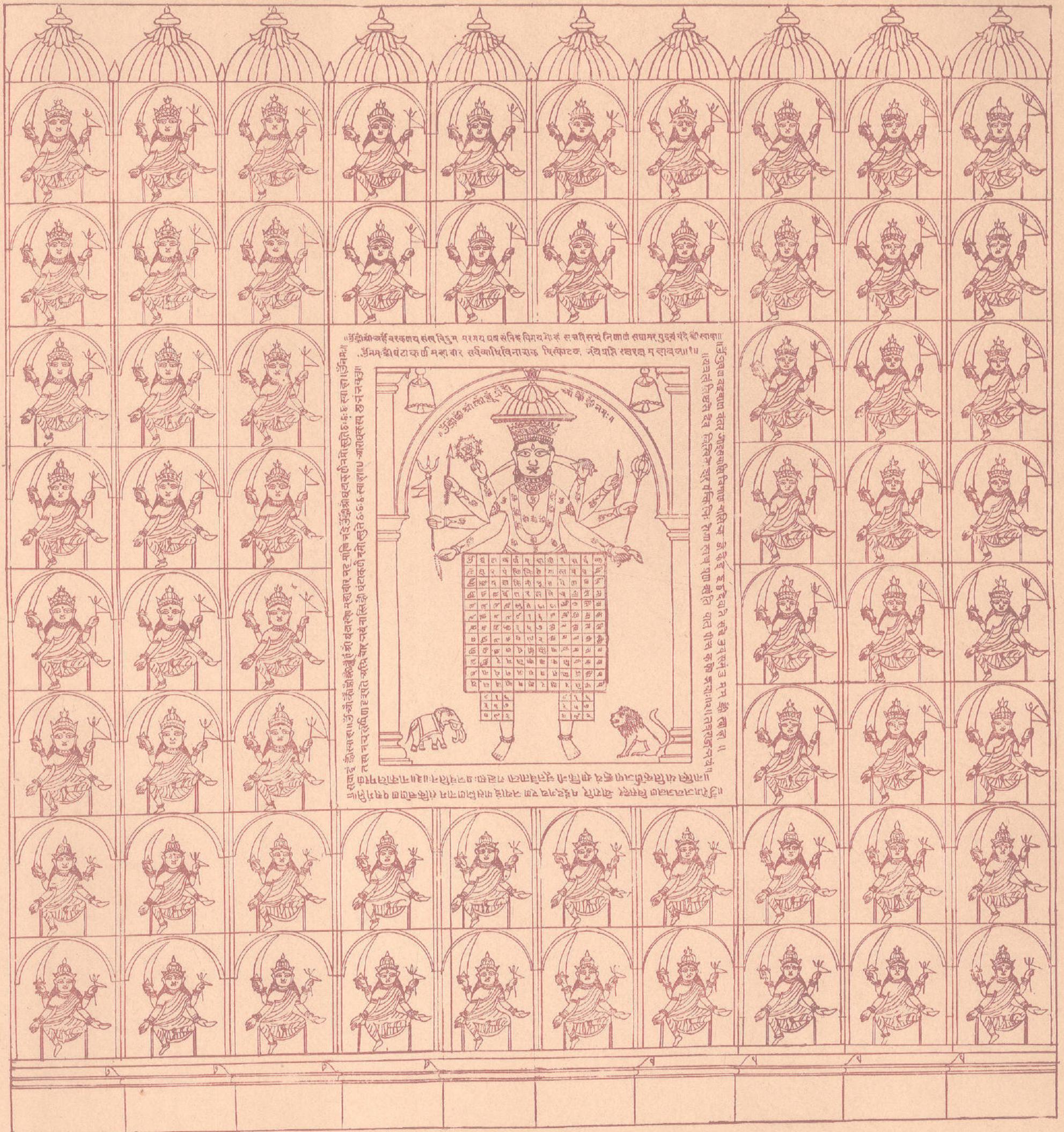
चित्र ८

श्री	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

चित्र ३



चित्र ९



॥ श्री चण्डेश्वरी वरकण्ठय सख्य विदुष्य परगय पयसिह विगय मे नं सचतिसय निगाय सद्यमर गुदय वंदे श्री साका ॥
 ॥ उमम श्री वंटा कर्ण मरु वीर सर्वव्याधिविनाशक विरुपाक्ष जयप्रति रसरक्ष म लायला ॥ ॥
 ॥ उग्रवद वदयाण वंदत आरुवाधिविगाय नरिसा जे वंदे इति वदयते सर्वे उग्रस्य उ म श्री साका ॥
 ॥ उग्रवद वदयते देव विरुपाक्ष वर वंकिनिः शैल साव यण सीति पात पीस कण कया ॥ ॥ तनराज नयं ॥
 ॥ श्री चण्डेश्वरी वरकण्ठय सख्य विदुष्य परगय पयसिह विगय मे नं सचतिसय निगाय सद्यमर गुदय वंदे श्री साका ॥
 ॥ उमम श्री वंटा कर्ण मरु वीर सर्वव्याधिविनाशक विरुपाक्ष जयप्रति रसरक्ष म लायला ॥ ॥
 ॥ उग्रवद वदयाण वंदत आरुवाधिविगाय नरिसा जे वंदे इति वदयते सर्वे उग्रस्य उ म श्री साका ॥
 ॥ उग्रवद वदयते देव विरुपाक्ष वर वंकिनिः शैल साव यण सीति पात पीस कण कया ॥ ॥ तनराज नयं ॥

चित्र १८ श्री वंटा कर्ण महावीर चोसठ योगिणी सहित

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	२०	५
१८	६	१५	४

॥ श्रीघंटाकर्णमहावीरमूर्तियंत्रमिदम् ॥
॥ घंटाकर्णमंथिनप्रवारा ॥

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

॥ अंशकणय संख विदुम ॥ मर गय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं ॥ सयं जिणाणं ॥ सब ॥
॥ अंनमः ॥ श्री घंटाकर्णमहावीर ॥ सर्ववा धिविनाशक ॥ विस्फोटक नये प्राप्ते ॥ रहरक महाबल ॥ ॥
॥ परपुत्रशंभुरे साहा ॥ श्री नवणवद काणवंतर ॥ जिहस वासा विमहावसी ॥ जि केह उट्टे वातिसेवे उ वस मंज प्रम ॥
॥ यत्र त्वं तिष्ठसे देवा ॥ तिरिखितो कर फंक्तिभिः ॥ रीणास्ववर्णायंति ॥ कात पीन कफो क्र जाः ॥ २ ॥ - ॥

॥ अंशं श्री लोकों घंटाकर्णमहावीर नमोस्तुति ॥
॥ ६: ६: ६: स्वाहा ॥

॥ अंशं श्री लोकों घंटाकर्णमहावीर नमोस्तुति ॥
॥ ६: ६: ६: स्वाहा ॥

॥ अंशं श्री लोकों घंटाकर्णमहावीर नमोस्तुति ॥
॥ ६: ६: ६: स्वाहा ॥

॥ अंशं श्री लोकों घंटाकर्णमहावीर नमोस्तुति ॥
॥ ६: ६: ६: स्वाहा ॥

॥ अंशं श्री लोकों घंटाकर्णमहावीर नमोस्तुति ॥
॥ ६: ६: ६: स्वाहा ॥

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

॥ अंशं श्री लोकों घंटाकर्णमहावीर नमोस्तुति ॥
॥ ते ६: ६: ६: स्वाहा ॥ श्री मूलमंत्र नो जाप १२५०० ॥ आरंभिक नो जाप सवाल ह नो ॥
॥ धुपदिप तप. ब्रह्मव्रत नृमिश्रयन पवित्रपणे एकान्ते पवित्रस्थाने करणी ॥
॥ सर्वकार्ये उपयोगियंत्रमिदं ॥

२८	५	३१	३६
३५	३२	८	२५
७	२६	३४	३३
३०	३७	२७	६

चित्र २२ श्रीघंटाकर्ण महावीर

NOT TO BE ISSUED



SHML
010032



NOT TO BE ISSUED,
7BL
1365
1264
~~Q3-27~~
10032